P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-1* (Part-2) April- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

आत्मकथा साहित्य में एक आयाम : 'एक कहानी यह भी'

मधु वर्मा
सहायक आचार्य,
हिंदी विभाग,
चौ. बल्लूराम गोदारा राजकीय कन्या महाविद्यालय,
श्रीगंगानगर, राजस्थान, भारत

सारांश

आधुनिक में महिला आत्मकथाकारों को प्रमुख आत्मकथाओं को दृष्टिगत रखते हुए मन्नू भंडारी की रचना एक कहानी यह भी को कहानी और आत्मकथा के तत्वों के आधार पर परखते हुए इसे आत्मकथा के क्षेत्र में परम्परा से अलग आत्मकथा साहित्य में एक नए आयाम के रूप में देखा गया है।

मुख्य शब्द : आत्मकथा, नवीनतम गद्य विधा, महिला आत्मकथाकार, आत्मकथा के तत्त्व, आत्मकहानी।

प्रस्तावना

साहित्य की कोई भी विधा सर्वदा – सर्वथा साहित्य के नियमों में बंधी हुई नहीं होती और न ही हो सकती है यदि ऐसा होता तो साहित्य नित नवीन नहीं होता। न ही जनता की चित्तवृत्ति का परिणाम और पूरी तरह से चली आती परंपरा का विकास (परंपरा भी नए रूप में सामने आती है ज्यों की त्यों नहीं)। साहित्य में जहाँ भी शास्त्रीय नियमों को रूढ़ि के रूप में अपनाया गया है वहाँ वैसी सफलता नहीं मिली (केशव की राम चंद्रिका) जितनी साहित्य में नए प्रयोगों से (राम की शक्ति पूजा निराला)।

अध्ययन का उद्देश्य

मन्नू भंडारी ने 'एक कहानी यह भी' शीर्षक से अपनी कहानी कह कर एक प्रश्न खड़ा कर दिया कि इस रचना को साहित्य की किस विधा के अंतर्गत रखा जाए ? इस शोध पत्र का उद्देश्य 'एक कहानी यह भी' की विद्या खोजने का प्रयास है।

शोध हेतु निम्न उद्देश्यों का निर्धारण किया गया है।

1. नवीनतम साहित्यक विधाओ को परंपरागत रूप में समझते हुए आधुनिक संदर्भो में जानना।
2. आत्मकथा की विशिष्टताओं को जानना।
3. 'साहित्य पहले लिखा जाता है और नियमों का निर्धारण बाद में होता है' परिप्रेक्ष्य में
   'एक कहानी यह भी' के साहित्यिक स्वरूप को जानना।
   'एक कहानी यह भी' का संवेदनात्मक आनंद प्राप्त करना।

साहित्य में नवीनतम गद्य विद्याओं का विकास भी एक नया प्रयोग और विकास ही है। गद्य में निबंध विधा का विकास और फिर यात्रावृत्त, आत्मकथा जैसी विधाओं का उद्भव। हालांकि इन विधाओं का विकास कोई चामत्कारिक नहीं था इनके बीज भी पूर्व साहित्य में देखे जा सकते हैं परंतु एक स्वतंत्र विधा के रूप में दिखाई पड़ना फिर क्रमशः विकास और उस के संबंध में शास्त्रीय नियमों का निर्धारण जैसे एक प्रक्रिया है वैसे ही फिर उस विधा में शास्त्रीय नियमों से परे नए प्रयोग उस विधा में नए आयाम तो स्थापित करते ही हैं साथ ही उस विधा की नीरसता और जड़ता को समाप्त कर उसमें वसंत का नया विकास और नवीनता लाते हैं। साहित्य भी इसलिए चिर नवीन होता है, साहित्यकार कालजयी होता है।

हिंदी में आज आत्मकथा एक महत्वपूर्ण विधा के रूप में स्थापित हो चुकी है कभी समय था जब कवि या साहित्यकार अपने बारे में कुछ भी कहना उचित नहीं समझते थे परंतु आधुनिक काल में गद्य के विकास के साथ ही हिंदी में आत्मकथा साहित्य भी आगे बढ़ रहा है। समकालीन साहित्य में तो नारी विमर्श के कारण महिला लेखिकाएँ साहित्य के क्षेत्र में आगे बढ़ रही है और आत्मकथा लेखन में तो महिला साहित्यकार बहुत सक्रिय दिखाई दे रही हैं। प्रतिभा अग्रवाल (दस्तक जिंदगी की, मोड़ जिंदगी का) कुसुम अंसल (जो कहा नहीं गया), कृष्णा अग्निहोत्री (लगता नहीं है दिल मेरा) पद्मा सचदेव (बूँद बावड़ी) शीला झुनझुनवाला (कुछ नहीं कुछ अनकही) जानकी देवी बजाज (मेरी जीवन यात्रा) दिनेश डालमिया (मुझे माफ करना) अमिता राकेश (चंद सतरें और) कृष्णा अग्निहोत्री (लगता नहीं है दिल मेरा) मैत्रेयी पुष्पा (कस्तूरी कुंडल बसै)

रमणिका गुप्त (हादसे), मन्नू भंडारी (एक कहानी यह भी) प्रभा खेतान (अन्या से अनन्या) चंद्रकिरण सौनरेक्सा (पिंजरे की मैना) कृष्णा अग्निहोत्री (और–और औरत) डॉ. सुषमा बेदी (आरोह–अवरोह) डॉ. निर्मला जैन (जमाने में हम), कौसल्या बैसन्त्री (दोहरा अभिषाप), सुशीला टाके भौरे (शिकंजे का दर्द) ऐसी ही आत्मकथाएँ हैं जिन्होंने आत्मकथा साहित्य को नया आयाम और दिशा दी है। यह सही है कि साहित्यकार कभी भी साँचे में बंध कर या ढाँचे में ढल कर नहीं लिखता। इन आत्मकथाओं में भी ऐसी आत्मकथाओं को देखा जा सकता है जो आत्मकथा के पारंपरिक साँचे से परे नए आयाम स्थापित करती है उनमें से एक नाम है – 'एक कहानी यह भी'। लेखिका ने ही इसे एक कहानी नाम दिया है। तो क्या इसे कहानी की श्रेणी में रखा जाना चाहिए ? मन्नू भंडारी के शब्दों में ''आज तक में दूसरों की जिंदगी पर आधारित कहानियां ही रचती थी, पर इस बार मैंने अपनी कहानी लिखने की जुर्रत की है। है तो यह जुर्रत ही क्योंकि हर कथाकार अपनी रचनाओं में भी दूसरों के बहाने से कहीं न कहीं अपनी जिंदगी के अपने अनुभव के टुकड़े तो बिखरेता रहता है। कहीं उसके विचार और अवसाद के क्षण... कहीं उसके सपने और उसकी आकांक्षाएँ अंकित है तो कहीं धिक्कार और प्रताड़ना के उद्‌गार। इतना सब जानने– महसूसने के बावजूद अगर मैंने इसे लिखा – तो केवल इस लिए कि दूसरों की कहानियाँ रचते' समय मुझे अपनी कल्पना की उड़ान के लिए पूरी छूट रहती थी जिसके चलते मैं उनकी जिंदगी से जुड़ी घटनाओं को जितना चाहती कॉटती–छॉटती बदलती–बढ़ाती रहती थी, क्योंकि उस समय मेरा लक्ष्य न सामने वाला व्यक्ति रहता था, न उसकी जिंदगी की किसी घटना या अनुभव को उकेरना।''[1]

दूसरी ओर लेखिका स्वयं इसे आत्मकथा की बजाय कहानी कहना चाहती है – ''आगे बढ़ने से पहले एक बात अच्छी तरह स्पष्ट कर देना चाहती हूँ कि यह मेरी आत्मकथा कतई नहीं है, इसीलिए मैंने इसका शीर्षक भी एक कहानी यह भी ही रखा। जिस तरह कहानी जिंदगी का एक अंश मात्र ही होती है एक पक्ष.....एक पहलू, उसी तरह ये भी मेरी जिंदगी का एक टुकड़ा मात्र ही है, जो मुख्यतः मेरे लेखकीय व्यक्तित्व और मेरी लेखन यात्रा पर केंद्रित है।''[2]

इतना ही नहीं लेखिका अपने जीवन की कुछ घटनाओं और पात्रों के मात्र इसलिए शामिल करना उचित नहीं समझती क्योंकि वे लेखन और साहित्य से हटकर हैं – ''अपने निजी जीवन की त्रासदियों भरे 'पूरक प्रसंग को लेखकीय जीवन पर केंद्रित अपनी इस कहानी में सम्मिलित किया जाए या नहीं इस दुविधा ने कई दिनों तक मुझे परेशान रखा। अपने कुछ घनिष्ठ मित्रों से सलाह ली और उनके आग्रह पर अंततः इसे सम्मिलित का निर्णय ही लिया।[3] यह तो बात हुई लेखिका की कहानी के रूप में स्वीकारोक्ति की।

अब प्रश्न है लेखिका ने जिस रूप में अपने जीवन से जुड़ी घटनाओं और पात्रों को अत्यंत अंतरंगता और निजता से चित्रित किया है वह सब एक कहानी के अंतर्गत आएगा अथवा किसी अन्य विधा में।

जहाँ तक कहानी का प्रश्न हे कहानी के परंपरागत तत्वों में कथानक, चरित्र–चित्रण, कथोपकथन, देशकाल वातावरण, भाषा–शैली और उद्‌देश्य आते हैं। कहानी यथार्थवादी भी हो तो उसमें लेखक का कल्पना आवश्यक रूप से होती है। दूसरों की कहानी लिखते हुए लेखक उसमें समा जाता है मन्नू भंडारी ने स्वयं लिखा है – ''यह भी कैसी विचित्र विडंबना है कि दूसरों की कहानियां रचते समय मुझे सामने वाले को उसकी संपूर्णता के साथ अपने में मिलाना पड़ता था और इस हद तक मिलाना पड़ता था कि स्व ओर पर के सारे भेद मिटाकर एकल एकाकार हो जाते थे।''[4] कहानियों में अपने अनुभव से लेखक आस–पास के वातावरण और पात्रों को चित्रित करता है। ''मेरी कम से कम एक दर्जन आरंभिक कहानियों के पात्र इसी मोहल्ले के हैं जहाँ मैंने अपनी किशोरावस्था गुजार अपनी युवावस्था का आरंभ किया था। एक–दो को छोड़कर उनमें से कोई भी पात्र मेरे परिवार का नहीं है। बस इनको देखते–सुनते, इनके बीच ही में बड़ी हुई थी लेकिन इनकी छाप मेरे मन पर कितनी गहरी थी, इस बात का अहसास तो मुझे कहानियाँ लिखते समय हुआ। इतने वर्षो के अंतराल ने भी उनकी भाव–भंगिमा, भाषा किसी को भी धुंधलता नहीं किया था और बिना किसी विशेष प्रयास के बड़े सहज भाव से वे उतरते चले गए थे।''[5] स्पष्ट है दूसरो के द्‌वारा भोगे गए जीवन का अंकन कुछ कल्पना , कुछ सरसता, कुछ जिज्ञासा के साथ। इस दृष्टि से 'एक कहानी यह भी' कहानी नहीं हो सकती। लेखिका स्वयं इसे कहानी कहते हुए यह कहना नहीं भूलती कि '' पर अपनी कहानी लिखते समय तो मुझे अपने को अपने से ही काटकर बिलकुल अलग कर देना पड़ा। यह निहायत जरूरी था और इस विद्या की अनिवार्य शर्त, तटस्थता की माँग भी कि लिखने वाली मन्नू और जीने वाली मन्नू के बीच पर्याप्त फासला बनाकर रख सकूँ।''[6]

कहानी की मूल प्रवृत्ति है जिज्ञासा। जो कहती है आगे बढ़ो। आत्मकथा का लेखक अतीत की स्मृतियों को पुनर्जीवित करता है इसलिए आत्मकथा अतीत को भी भोगती है। मन्नू भंडारी भी अपने अतीत की उन स्मृतियों में रस लेती है आगे बढ़ने की कभी–कभी कोई जल्दबाजी नहीं लगती।'' एक बार कॉलेज से प्रिंसिपल का पत्र आया कि पिताजी आकर मिलें और बताएँ कि मेरी गतिविधियों के कारण मेरे खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई क्यों न की जाए, पत्र पढ़ते ही पिताजी आग–बबूला। ''यह लड़की मुझे कहीं मुँह दिखाने लायक नहीं रखेगी..... पता नहीं क्या–क्या सुनना पड़ेगा वहाँ जाकर। चार बच्चे पहले भी पढ़े किसी ने ये दिन नहीं दिखाया।'' गुस्से से भन्नाते हुए ही वे गए थे। लौटकर क्या कहर बरपा होगा, इसका अनुमान था, सो मैं पड़ोस की एक मित्र के यहाँ जाकर बैठ गई।''[7]

अपनी बात कहते हुए मन्नू जी भी तत्कालीन परिवेश के प्रति भी सजग है ''आजादी की खुशियों भरा दिन और साथ ही विभाजन की त्रासदी का घाव कुछ भी अछूता नहीं रहा – कितना मन था कि दिल्ली जाकर

किसी तरह सत्ता का हस्तांतरण देखने को मिले क्योंकि लगता था कि जैसे इस उपलब्धि में हमारा भी योगदान है। पर यह संभव नहीं था सो अजमेर की सड़कों पर ही जश्न देखा। अजमेर शहर में वैसी दीवाली न पहले कभी मनी होगी, न बाद में। आजादी के साथ जुड़ा विभाजन और उसकी भयंकर त्रासदी.....सूचना के स्तर पर तो हमें यह सब मालूम हुआ पर संवेदनो के स्तर पर उस समय हमने उसकी आंच महसूस नहीं की।''[8]

यदि हम आत्मकथा की कतिपय विशेषताओं की ओर दृष्टिपात करें तो आत्मकथा में लेखक अपने ही भोगे गए जीवन को आत्मनिरीक्षण, आत्म ज्ञान के उद्देश्य से लिखता है। क्रमबद्वता, व्यवस्थित रूप सत्यता, यथा तथ्यता, तटस्थता लेखक की भावनाएँ, संवेदना तत्कालीन परिवेश और इन सबसे अधिक समाज और राष्ट्र के लिए आत्मकथा दिशा निर्धारक और प्रेरक भी होती है। एक कहानी यह भी इन सभी कसौटियों पर खरी उतरती है लेखिका ने यथासंभव क्रमबद्वता से अपने जीवन का अंश प्रस्तुत किया है जन्म से लेकर एक कहानी यह भी रचने तक जैसे लेखिका ने एक एक पल को पुनः जीते हुए पूरी आत्मीयता से आत्मकथा रची है जिसका नायक वे स्वयं ही है। अपने बचपन की यादों को पृष्ठभूमि के रूप में प्रस्तुत करते हुए वे अपने व्यक्तित्व को मजबूती देती है।

मन्नू जी बड़ी कुशलता और निष्पक्षता से आत्मकहानी को आगे बढ़ाती हैं ''पर उससे भी बड़ा संकट था कि आया जब–तब नागा कर जाती तो समझ ही नहीं आता था कि दो महीने की बच्ची का मैं क्या करूँ? उसे देखना न राजेन्द्र के बस का काम था और न ही वे उसके लिए तैयार थे क्योंकि उनके मन की असली गॉठ तो यह थी कि मेरे कॉलेज जाने की पीछे अगर उन्होंने बच्ची को देखा तो वे उसकी आया बनकर रह जाएँगे और उनका अहं उन्हें इस बात की अनुमति नहीं देता था।''[9]

चाहे साहित्यिक मंथन हो या व्यक्तिगत जीवन की उलझने बड़ी सहजता से व्यक्त होती जाती है जिसे पढ़ते–पढ़ते एक स्त्री अपने आपको मन्नू समझने लगती है चाहे हर औरत, लेखिका नहीं है, फिर नारी–पुरूष के संबंध पत्नी पति के रूप में कमोबेश यही है। पुरूष एक आया, एक काम वाली नहीं कहलाना चाहता परंतु स्त्री घर का कामकाज देखने के बाद कमाने वाली नौकरी करने वाली सब है।

निष्कर्ष

यह एक आत्मकथा है एक स्त्री की आत्मकथा। एक नए रूप के साथ, एक नए आयाम के साथ।

अंत टिप्पणी

1. *एक कहानी यह भी – मन्नू भंडारी प्रकाश राधाकृष्ण पेपर बैक्स, पृ.7*
2. *वही–पृ. 8*
3. *वही–पृ.10*
4. *वही–पृ.9*
5. *वही–पृ.20*
6. *वही–पृ.10*
7. *वही–पृ.23*
8. *वही–पृ.26*
9. *वही–पृ.65*